HIV+

Network

UKNP+

वार्षिकप्रतिवेदन

2017-18

प्राक्कथन

प्रियसदस्यो जैसा कि हम सब जानते है कि हमसब वर्ष 2010 से उत्तराखण्ड़ राज्य में राजय स्तरीय नेटवर्क उत्तराखण्डएसोशिएसन फॉर पॉजिटिव पीपुल लिविब विद् एचआईवी/एड्स कें सदस्य के रूप में सस्थां से जुड़े हुए है। और वर्ष 2010 से पहले से हम सभी के द्वारा यह शपथ ली गई थी कि हम हर परिस्थिति में हमारे उत्तराखण्ड़ राज्य कें सभी पी. एलएचए भाईयों एंव माता बहनो के समर्थन के लिए हर संभावित प्रयास करने का प्रत्यन करेगे। जिसके लिए हम वचन बद्द है। जैसा कि हम सभी जानते कि समुदाय के सभी सदस्यो ने कई प्रकार कि कठनाइयों का सामना करते हुए पीएलएचए व्यक्तियों में सस्थां का प्रभाव समुदाय के प्रति सम्मान और परिवारिक भावना को बनाए रखने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है जिसके लिए में हदृय से आप सबका आभारी रहूंगा आज दिनाक 31 मार्च 2018 को सस्थां को 8 वर्षा 1 माह 6 दिन हो गए है जो कि अत्यंत उल्लास का विषय है और यह समुदाय के सभी सदस्यों एंव कार्यकर्ताओं के निशाचय और सकंलप को दर्शाता है।

सस्थां द्वारा कई महत्तवपूर्ण प्रयास किए गए है जो कि पीएलएचआईवी के जिवन को प्रभवित कर उन्हे जिन्दगीं कि नई किरण प्रदान करतें है।

1. पीएलएचआईवी व्यक्तियों को निःशुलक योग एंव स्वास्थय चैकअप शिवरों का आयोजन।
2. गरीब एंव बेसहारा पीएलएचआईवी व्यक्तियों के लिए स्वास्थ्य सहयाता।
3. अनाथ एंव बेसहारा बच्चो यात्रा भत्ता एंव राशन साम्रगी प्रदान करना
4. असहाय व्यक्तियों को घर. घर जाकर आहार एंव आर्थिक सहायता प्रदान करवान।
5. गरीब पीएलएचए बच्चो का निशुलक ऐंडमिशन और शैक्षिक सामग्री का वितरण।

इन मॉगो को लेकर नेटवर्क के सदस्यो द्वारा कई सस्थांओं दानदाताओ एंव अनुदान करताओ के समक्ष सहयोगा मॉग गया जिसके चलते दॉ आर्ट ऑफ लिंविग फाउडेशन सस्थां जो कि डकाटरों अध्यापक एंव अध्यापिकाओं का समूह है जो कि समाज मे समान्ता एंव सहायता का भाव लाने के लिए प्रयासरत है। जिनके माध्यम से सस्थां उक्त सभी गतिविधियों से पीएलएच. आईवी समूह को सहयोग प्रदान कर पा रही है जिसके लिए हम सभी सदैव **दॉ आर्ट ऑफ लिंविगा फाउडेशन** के कृतज्ञ रहेगें।

इसके अतिरिक्ति विहान केयर एण्ड सपोर्ट सेन्टर के माध्यम को संक्रमित व्यक्तियों/महिलाओं और बच्चो को निम्न योजनाओ से लाभप्रद किया गया है जिसमें कि समाजिक सहायता सम्मिलित है इसके अतिरिक्त समुदाय के स्टेक होल्डर सदस्यो को भी जोडा गया है जिनके माध्यम से अनके सेवाये एवं सुविधाये प्रदान किये जाने का मार्ग प्रस्सत किया गया है।

2017-18 की वर्षिक प्रतिवेदन मेरेद्वारा जारी किया जा रहा है।नेटवर्क की उपलब्धी एवं इसकी सेवाओ हेतु मैं आपने साथियॉ को हार्दिक शुभकामनाये देता हूॅ और आशा करता हूॅ कि इस वार्षिक प्रतिवेदन से उत्तराखण्ड ऐसोसियेशन फॉर पॉजिटिव पीप्यूल लिविंग विद् एचआईवी/एड्स, देहरादून द्वारा प्रदेश को एचआईवी के साथ जी रहे लोगो के उत्थान के प्रयासो को ओर बढाया जायेगा।

(राम प्रसाद)
अध्यक्ष

कलम से

उत्तराखण्ड परिदृश्य

उत्तराखण्ड राज्य का गठन नवमबर 2000 में भारत के 27वें राज्य के रूप मे हुआ। अगर भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तोउत्तराखण्ड राज्य भारत के अन्य राज्यो से काफी अलग है। उत्तराखण्ड मे 75 प्रतिशत हिस्सा पहाडी क्षेत्र मे है। जिस में वर्षा पर अधारित कृषि की जाती है। उत्तराखण्ड मे रोजगार योग्य समतल भूमि की कमी है। राज्य के गठन से लेकर अब तक पहाडी स्थान पर रोजगार की कमी रही है। उद्योगों क्षेत्र में भी यह अन्य राज्यों से पीछे है। पहाडी स्थानो पर किसी भी प्रकार का उद्योगों स्थापित नही हो पाया है। इसी कारण यहां की अधिकतर युवक रोजगार की तलाश में निचले समतल इलाकों में उतरने को मजबूर है। यहा पर पलायन की समस्या बनी हुई। जिसके परिणाम स्वरूप यह के युवक को घर से दूर जाना पडता है जिसके चलते व्यक्ति चाहतें अन्यत्र होने लगती है वह अपनी चाहतो को सतुष्ठ करने के लिए गलत दिशा में भटक जाता है, और जाने अनजाने में कई युवक इस खतरनाक बीमारी (एचआईवी/एड्स) की चपेट में आ जाता है। उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्र जैसे देहरादून, हरिद्वार, ऊधम सिंह नगर, नैनीताल आदि क्षेत्रों में प्रवासी एंव अन्य राज्य के लोगों का अवागमन अधिक है जिससे भी यह खतरनाक बीमारी (एचआईवी/एड्स) उत्तराखण्ड मे धीरे धीरे अपना पैर फैला रही है। यधपि हम सम्पूर्ण भारत मे देख तो यह एआईवी की दृष्टि से कमप्रतिशत संक्रमण वाला प्रदेश है, लेकिन यहॉ कि भौगलिक स्थिति ही कठिन होने के कारण एच. आई. वी संक्रमित व्यक्ति को अनको कठीनाईयॉ का समाना करना पडता है।

स्थिति	पुरूष	महिला	टी. जी	पुरूष बच्चे	महिला बच्चे	कुल योग
प्री. एआरटी	312	264	3	35	29	643
ऑन एआरटी	640	553	6	64	77	1340
योग	908	784	9	99	106	1983

उक्त प्रेषित सख्या केवल उन व्यक्तियों कि है जो कि निरतर रूप से ए. आर टी सेन्टर से उपचार ले रहे है असल में सक्रमिंत व्यक्तियो कि सख्या 7000 से भी अधिक है जो कि सरकार के नियत्रंण से बाहर है।

उत्तराखण्ड राज्य में अन्य राज्यो कि तुलना में एचआईवी संक्रमण की प्रतिशत कम होने के कारण लोगो का ध्यान कम जाता है तथा अन्य राज्यों की तुलना में यहां पर राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार का ध्यान कम रहता है।उत्तराखण्ड राज्य में 70 प्रतिशत संक्रमित व्यक्ति पहाडी क्षेत्रो से है। इसलिएभौगौलिक स्थिति के कारण यह बहुत महत्वपूर्ण हैं कि उत्तराखण्ड राज्य में एचआईवी के साथ जीवन यापन करने वाले लोग किस तरह से अपना जीवनयापन करते है। और वर्तमान समय में एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों के लिए जिवोअर्पन जैसे कि कौशल विकास योजना एंव सुक्षम लघु उध्योग के साथ जोडना एंव महिलाओं एंव पुरूषो में स्वंय सहायता समूहो का निर्माण करना।उत्तराखंड राज्य में इस रोग के प्रति व्यापक जागरूकता कार्यक्रम किया जाना आवश्यक है।जिसमे दवाई का अनुपालन, एचआईवी. के साथ

किस तरह से लम्बा जीवन यापन करसकते है, एक एचआईवी संक्रमित व्यक्ति द्वारा किस प्रकार से इस संक्रमण को रोक एवं कम किया जा सकता है, औरएचआईवी से ग्रसत व्यक्तियों के जीवनशैली को सुधारा जा सके और साथ ही साथ टीबी कि मौजूदा स्थिती को देखते हुए एचआईवी के साथ साथ टीबी से सक्रंमित व्यक्तियों पर ध्यान केंद्रिंत करने कि आवशयकता है जिसके उपरान्त टीबी सक्रमिंत व्यक्तियों के लिए खाध्य सामग्री,और अन्य पौष्टिक आहार सामग्री का वितरण भी किया जाना आवश्यक है।

सस्थां का परिचय

उत्तराखण्ड एसोसियेशन फॉर पोजिटिव पीप्यूल लिविंग विद् एचआईवी/एड्स

उत्तराखण्ड जिसे देवो की भूमि कहा जाता है। यह प्रदेश भी एचआईवी से अछुता नही रहा। वर्तमान समय में राज्य में **7200** से अधिक एचआईवी संक्रमित व्यक्ति है जोकि आईसीटीसी जॉच में पाये गये है। यधपि हम सम्पूर्ण भारत मे देख तो एआईवी की दृष्टि से कमप्रतिशत संक्रमण वाले प्रदेशो कि श्रेणीी मे आता है, लेकिन उत्तराखण्ड राज्य मे दिन प्रति दिन एच. आईवी. संक्रमित व्यक्तियो की संख्या बढ रही है।

आज के दौर मे समस्त लोग एचआईवी/एड्स की बाते तो बहुत करते हैं परन्तु जो लोग एचआईवी से संक्रमित है उनकी कोई बात नही करता। एचआईवी संक्रमित व्यक्ति को समाज के दोषी, कलंकित, लाछन भेदभाव से परिपूर्ण और समस्त समुदाय को धृणा कि दृष्टि से देखा जाता है वर्कर की नजर से देखा जाता है, यही दोषपूर्ण व्यवहार एचआईवी संक्रमित लोगो को समाज में बराबरी का हक प्रदान नही करता। कई ऐसी कुरीतियॉ हैं जो कि एच. आईवी संक्रमित व्यक्ति को सहम कर जीने को मजबूर करती है। इन्ही कारणो से और अपने हक के लिये एचआईवी संक्रमित बुद्धि जीवी व्यक्तिया द्वारा एक संगठन का गठन किया गया तथा राष्ट्रीय स्तर नेटवर्क आईएनपी के प्रयास से उत्तराखण्ड राज्य में फरवरी 2010 में उत्तराखण्ड एसोसियेशान फॉर पॉजिटिव पीप्यूल लिविंग विद् एचआईवी/एड्स की स्थापना की गई। सोसायटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम 1860 के तहत पंजीकृत संस्था है। पंजीकरण संख्या 385/2009-10 है। यह उत्तराखण्ड एसोसियेशान फॉर पॉजिटिव पीप्यूल लिविंग विद् एचआईवी/एड्स एक समुदाय स्तर का संगठन है। संगठन को गठन उत्तराखण्ड राज्य में एचआईवी के साथ जीवन यापन कर रहे लोगों के अधिकार के लिए एक मंच पर एकत्रित करना है। संगठन की प्रबन्धकारिणी समिति में 11 सदस्य हैं। इनमें से अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, सहसचिव, कोषाध्यक्ष, एवं 6 सदस्य सहित सदस्यगण मौजूद हैं। प्रबन्धकारिणी समिति सदस्य में यह ध्यान भी रखा गया है कि उत्तराखण्ड के सभांवित प्रत्येक जिले से एक सदस्य प्रतिभाग करे क्योंकि आने वाले समय में नेटवर्क की भविष्य में जिला स्तर पर नेटवर्क गठन किया जा सके इस ओर पहल करते हुये उत्तराखण्ड एसोसियेशान फॉर पॉजिटिव पीप्यूल लिविंग विद् एचआईवी/एड्स, देहरादून के द्वारा नैनीताल (हल्द्वानी) एवं देहरादून जिले में नेटवर्क का गठन किया जा चुका है।

संगठन को उत्तरखण्ड ऐसोसियेशन फॉर पॉजिटिव पीप्यूल लिविंग विद् एचआईवी/एड्स, एवं उत्तराखण्ड नेटवर्क के नाम से जाना जाता है। उत्तराखण्ड ऐसोसियेशन फार पॉजिटिव पीप्यूल लिविंग विद् एचआईवी/एड्स को एनसीपीआई राष्ट्रीय स्तर के नेटवर्क द्वारा राज्य स्तर के

नेटवर्क का दर्जा प्राप्त है, और यह संस्था एचआईवी संक्रमित व्यक्तियो, महिलाओ एवं बच्चो के समर्पित है।

उत्तराखण्ड भले ही कम संक्रमण वाले राज्य में है लेकिन उत्तराखण्ड राज्य में एचआईवी के साथ जीवन यापन करने वाले लोगो की स्थिति अच्छी नही हैं। क्योंकि उत्तराखण्ड में जो लोग इस रोग से ग्रसत है उनमे कई महिलायें विधवा है बच्चे अनाथ हैं पुरूषो के पास रोजगार नही है। पौष्टिक आहार की हमेशा कमी रहती है। दवाईयों के लिये मीलों दूर पैदल आना पडता है। और एआरटी सेन्टर आने के लिये कई लोगों को एक दिन पहले आना पडता है। उत्तराखण्ड नेटवर्क द्वारा निम्न बिन्दुओं पर बार-बार मॉग शासन के समक्ष रखी गई है।

- संक्रमित व्यक्तियों को निशुल्क बस पास सेवा।
- बच्चों का पौष्टिक आहार हेतु योजना।
- एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों को पेशन।
- संक्रमित व्यक्तियॉ को खाद्य सुरक्षा योजनां
- शिक्षा एवं उच्च शिक्षा मे छात्रवृति योजना।
- विधवा और अनाथ बच्चों के लिये अल्प विश्राम गृह/अनाथालय।
- उत्तराखण्ड राज्य की अपनी एच. आई वी की नीति।

नेटवर्क

उत्तराखण्ड में एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों का संगठन

लक्ष्य

Þउत्तराखण्ड राज्य में एचआईवी के साथ जीवन यापन करने वाले लोगों को एक मंच के तहत संगठित करना। उनके जीवन के अस्तित्व और गुणवत्ता में सुधार और एचआईवी. संक्रमण को कम करने एवं सकारात्मक गतिविधियों का विस्तारß

नेटवर्क का उद्देश्य/कार्य

नेटवर्क/संगठन का उद्देश्य राज्य में संक्रमित एवं दवा ले रहे व्यक्तियों के प्रति केयर एवं सर्पोट का कार्य निश्पादन करना है। नेटवर्क द्वारा उत्तराखण्ड राज्य में एचआईवी के साथ जीवन यापन करने वाले लोगो को संगठित करने हेतु निम्न उद्देश्य का निष्पादन किया जाना है।

- एचआईवी व्यक्तियों के समूह के माध्यम से जिला स्तर पर नेटवर्क का गठन करना।
- एचआईवी. पर व्यवहार संहिता के सिद्धांन्तो को प्रोत्साहित एवं लागू करना।
- एचआईवी. सक्रंमित व्यक्तियों को सशक्त बनाने का प्रयास किया जाना।
- एचआईवी. संक्रमित समुदाय के जीवकोपार्जन और सामाजिक सुरक्षा के लिये कार्य करना।

- एचआईवी. संक्रमित समुदाय में आजीविका हेतु स्वयं सहायता समूहों के निर्माण का प्रयास करना।
- एचआईवी संक्रमित अनाथ बच्चों, विधवा महिलाओं, बेघर एवं अश्रितों के समुदाय के लिये शिक्षा, स्वरोजगार, एवं आश्रय के लिये सहयोगात्मक प्रयास करना।
- एचआईवी. संक्रमित समुदाय के लिये सकारात्मक औषिधियों, टीका एवं औषिधियो के अनुसंधान पर सकारात्मक सहयोग करना।
- राज्य में एचआईवी के साथ. -साथ अन्य वर्गो के व्यक्तियों को भी सहयोग प्रदान जिससे कि समाज में स्थिरता बनी रहे ।
- राज्य भर में एचआईवी./एड्स विषय पर जागरूकता हेतु कार्यशाला, सेमीनारो का आयोजना करना।

उत्तराखण्ड नेटवर्क की भविष्य योजना

- एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों को स्वरोजगार परक प्रशिक्षण।
- उत्तराखण्ड के प्रत्येक जिले में जिला स्तरीय नेटवर्क का गठन।
- पीएलएच. वर एंव नेटवर्क के सदस्यों को सरकारी योजनाओ में उचित भागीदारी एवं आर्थिक सहायता में सहयोग।
- एचआईवी. पॉजिटिव व्यक्तियों की पारिवारिक समस्याओं एवं भेदभाव को मिटाने के प्रयास हेतु जागरूकता कार्यक्रम।
- राज्य में एच दृआईवी./एडस के साथ जी रहे व्यक्तियों की समस्याओं की जानकारी हासिल करना व उनके निराकरण हेतु सुनियोजित प्रयास करना ।
- अनाथ बच्चो को मुफ्त शिक्षण सामग्री प्रदान करना
- वृद्धो के लिए विश्राम गृह की सहायता।
- ग्रभवति मलिलाओ को संकम्रण से बचाना।
- एचकृआईवी सकेमित व्यक्तियों को समाज के अन्य वर्बो में सम्मिलित करना।
- एचआईवी के साथ. साथ अन्य समाज सुधारक परियोजना एंव कार्याक्रमों मे बढ चड़ कर भाग लेना।

नेटवर्क द्वारा संचालित परियोजना का विवरण वर्ष 2017-2018

विहान परियोजना

विश्व में एचआईवी./एड्स पीडितों की समस्या एवं व्यवहार संहिता सिद्धान्तों के सरंक्षण, केयर और सर्पोट के लिये द ग्लोब फन्ड-टू फाईट एड्स, टयूबरक्लोसिस् एण्ड मलेरिया नामक विश्व स्तरीय सस्थांन जिसके द्वारा विश्व स्तर पर कार्यक्रम को वित्त पोषित कर रही है। भारत मे द ग्लोब फन्ड-टू फाईट एड्स, टयूबरक्लोसिस् एण्ड मलेरिया के द्वारा नेशनल एड्स कन्ट्रोल ओर्गेनाईजेशन को भारत मे प्रिसिंपल रिसिपेन्ट प्रथम स्तर पर चयनित किया गया है। इसी क्रम में एलाइंस इण्डिया को एचआईवी./एड्स को प्रिसिपंल रिसिपेन्ट द्वितीय स्तर पर चयनित किया गया हैं तथा ममता-हेल्थ इन्सटीटियूट फॉर मद्र एण्ड चाइल्ड को क्षेत्रिय स्तर पर सब रिसिपेन्ट के स्तर पर चयन किया गया था। जो कि 01 जून 2018 से नेशनल नेर्टवक को यानी एनसीपीआई को सौंप दिया गया है।

वर्ष 2013 अप्रैल में विहान परियोजना का क्रियान्वयन आरम्भ किया गया है। विहान परियोजना का संचालन प्रथम चरण में 31 राज्य में 315 केयर एण्ड सर्पोट सेन्टर को स्थापित कर किया गयाा है। इन्ही 315 केयर एण्ड सपोर्ट सेन्टर में एक उत्तराखण्ड राज्य मे देहरादून स्थिति एआरटी सेन्टर देहरादून के सापेक्ष विहान केयर एण्ड सपोर्ट सेन्टर का सचांलन उत्तराखण्ड एसोसियेशन फॉर पोजिटिव पीप्यूल लिंविग विद् एचआईवी!/एड्स, देहरादून के माध्यम से किया जा रहा है। विहान परियोजना के कुछ तथ्य निम्नवत् है :-

विहान

पहली किरन

(विहान संस्कृत शब्द है)

शीर्षक

पीएलएचए. के लिये देखभाल, समर्थन और उपचार सेवाओं को अनुपात स्तर में सुधार

लक्ष्य

एचआईवी./एड्स के साथ रहने वाले लोगों के जीवन के अस्तित्व और गुणवत्ता मे सुधार करने का *संकल्प*

सम्पूर्ण उद्देश्य

देखभाल और सहायता सेवाओं को मजबूत बनाना और दवा के पालन में संशक्तिकरण

एलएफयू एंव मीस्ड़ व्यक्तियों को को खोज कर उनको दोबारा से दवाइयों पर लाना।

जगरूकता कर्याक्रमो का आयोजन किया जाना।

सामुदायिक के व्यक्तियों के जिवन को बेहतर बनाने हेतु प्रयास।

पोषण आहार

यह परियोजना ना होते हूए भी सस्था के दायित्तवों एंव क्रियो में एक अहम योगदान दे रही है । जिसकी शरूआत आज से 3 वषा पहले हुई जिसके माध्यम से गरीब एंव बेसहारा बालक-बालिकाओं को निशुलक पोषण सामगी वितरण किया जाना तय किया गया था जिसके लिए सस्था के सदस्यों द्वारा माॅ कालिका माता मदिर सेवा समिति के समक्ष माॅग रखी गई

थी जिसके चलते उत्तराखण्ड़ राज्य के 20 बालक बालिका जो कि 15 वर्ष तक कि आयु के हो उनको प्रत्येक माह आहार सामग्री दिए जाने के लिए समिति के सदस्यों द्वारा सहयोग किया जाने लगा जो कि आज बढ कर 80 बालक बालिकाओं तक हो गई है जिनको कि प्रत्येक माह पौषण सामगी वित्तीत कि जा रही है।

आश्रय

वर्ष 2010 से सस्था का मनतवया रहा है हर सभंव माध्यम से पीएलएचआईवी व्यक्तियो को लाभांवित एंव सहयोग करना था जिसके अंतर्गत श्री आन्नद सिंह तोमर पूर्व मुख्य सहायक जो कि एआरटी सेन्टर के प्रथम सक्रमिंत पजीकृत व्यक्ति थें जिन्होने अपना पूर्ण जिवन समुदाय के लिए नयौछावर कर दिया था। श्री आन्नद सिंह तोमर द्वारा वर्ष 2010 में प्रबन्धकारिणी सदस्यों के समक्ष यह प्रस्ताव रखा गया था कि ससांथा के सदस्यों के सहयोग से दूर-दराज से आने वाले पीएलएचआईवी व्यक्तियो को रात्री विश्राम गृह और जरूरत अनुसार कलाइंट को वित्तीय सहायता देने का प्रस्ताव भी रखा गया था। जिसको सस्था के

सदस्यों पूर्व 8 वर्षो से दायत्तिवों कि भांती वहन कर रहे है और आज सस्था प्रतिदिन 5-
6 के लिए निः शुलक रात्री विश्राम का प्रबध कर रही है।

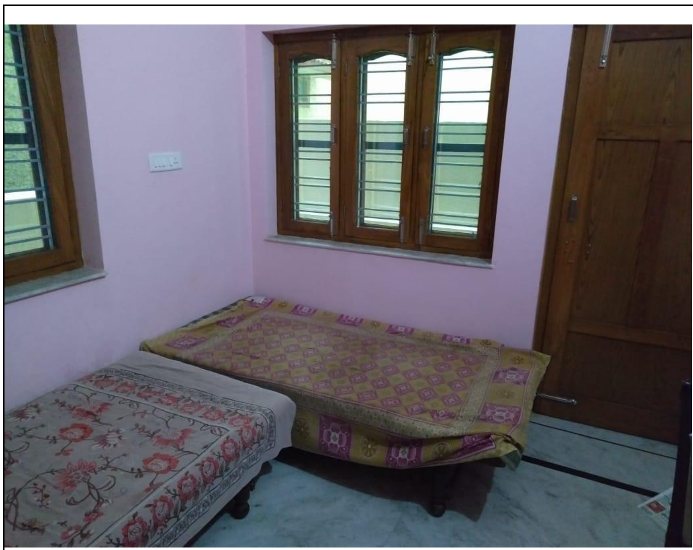

वस्त्र वितरण

संस्था द्वारा गरीब एंव बीमार पीएलएचकृआईवी व्यक्तियों कि वस्त्रों एंव अन्य स्थितीयों को देखते हुए संस्था के अध्यक्ष एंव सचिव द्वारा गरीब बेसहारा बच्चों एंव माताओ के लिए उपयोग ना किए जाने वाले एंव दान किए गए कपडों कि व्यस्था किए जाने पर विचार किया गया जिसके पश्चात अध्यक्ष एंव सचिव द्वारा सभी परिचित व्यक्तियों से सहयोग माग

कि जिसके उपरान्त समस्त गढवाल क्षेत्र से आए हुए गरीब व्यक्तियों के लिए निरतंर कपडों का इंतेजाम सस्था द्वारा निरतंर किया जा रहा है औरसाथ ही साथ यह भी ध्यान दिया जाता है कि जो व्यक्ति कपडों को ले जाने का इच्छुक है वह बिना किसी रोक टोक के अपनी पसंद एंव इच्छा के अनूसार कपडो का चुनाव कर सके और उन्हे वस्त्रो को लेने में किसी भी प्रकार कि हिचकिचाहट या सकोंच महसूस ना हो। जिसके चलते सस्था विगत वर्ष 2017.18 मे 20 से अधिक बच्चो एंव 12 महिलाओं को निशुलक वस्त्र वित्तृ कर चुकि है।

अन्य कार्यक्रम

वर्ष 2017.18 में दॅा आर्ट आफ लिंविग फाउडेशन नामक सस्था के सदस्यों द्वारा एचआईवी सक्रमित व्यक्तियों कि सहायता कारने हेतु सस्थां अध्यक्ष एंव सचिव के समक्ष एक प्रस्ताव रखा गया जिसमें कि दॅा आर्ट आफ लिंविग फाउडेशन के सदस्य मिल कर एचआईवी सक्रमिंत गरीब तबके के व्यक्तियों को निम्न सामाजिक सहयाता निशूलक प्रदान करवाएगें

सहयोग

सस्था द्वारा दिनांक 14.8.2017 को ममता सस्थां नई दिल्ली एंव उत्तराखण्ड़ राज्य एड़स नियंत्रण समिति के सहयोग द्वारा विकास भवन रायपुर रोड़ देहरादून में कर्याशाला का आयोजन किया गया था जिसका उद्देश्य समाजिक शुरक्षा योजना के अतंर्गत राज्य के पीएलएचआईवी व्यक्तियों के लिए सरकारी सहयाता से जोडना था। जिसके अंतर्गत विकास भवन में एडवोकेसी कर्याक्रम का आयोजन किया गया था।

0योग एंव स्वास्थय शिवरों को आयोजन।

0गरीब बच्चों को राशनएंव अन्य खाध्य सामग्री वितरण।

0अनाथ एंव गरीब बच्चों के लिए स्कूली सहायता एंव विभिन्न कर्या सामग्री।

0गरीब परिवारो के लिए सस्ते दरों में स्वास्थय सेवाएं और निशुलक परामर्श।

नेटर्वक द्वारा सचालिंत परियोजना के उद्देश्य

- समर्थन और उपचार सेवाओं, देखभाल के लिये शीध्र लिकेंज।
- सक्रंमित व्यक्तियॅा को उपचार शिक्षा को केयर एण्ड सर्पोट सेन्टर में उपलब्ध कराना।
- समग्र उपचार की सफलता के लिये सेवा में वृद्धि, जैसे खानपान की पौष्टिक शिक्षा, स्वस्थ्य जीवन शैली और मनोसामाजिक सुरक्षा आदि।
- एक के बाद एक से परार्मश, विशेष चुनौतियों पर चर्चा करने के लिय सक्रंमित सामुदाय का समूह बैठक का आयोजन करना।
- एक प्रणाली के तहत देखभाल करने वाले तथा परिवारिक सदस्यो का धर आधिरित देखभाल का मार्गदर्शन किया जाना जिसमे प्रशिक्षित सहकर्मी स्वंय सेवक भी शमलित हैं।
- बेहतर उपचार का पालन और शिक्षा।
- *उच्च जोखिम समूह पर उपचार पालन एवं शिक्षा पर विशेष ध्यान।*
- *समस्त पीएलएचए. बच्चे, महिला एव उच्च जोखिम समूह सहित सब को प्रशिक्षित सेवा प्रदाता से उच्च सेवा के उत्तरादायी तथा उनकी सेवा की समय समय मे प्रतिक्रिया का अदान प्रदान किया जाना।*
- *एआरटी सेन्टर और केयर एण्ड सर्पोट सेन्टर के बीच मे नियमित समन्वय तथा सामजिक सहयोगी भागदारी का सुनिश्चित किया जाना।*
- प्रारंभिक प्रीक्षण में वृद्धि और सकारात्मक विस्तृत गतिविधियों को रोकना।

- *परार्मश और सहकर्मी सहयोगी के माध्यम से शीध्र परीक्षण और उसके निदान को बढावा देना।*

  एसआरएच. को शिक्षा एव सहयोग।

- सकारात्मक रोकथाम और अन्य दूसरे सक्रमण की रोकथाम के लिये कर्मीयो का प्रशिक्षित करना तथा सुरक्षित यौन-क्रिया तथा स्वस्थ्य जीवन शैली हेतु शिक्षित करना।

- नवजात शिशू मे उपचार हेतु मॉ और परिवारो को समन्वय एव सहयोग को सुनिश्चित करना विशेष कर जो बच्चे एचआईवी से सक्रमित है।

- पीएलएचए का सामाजिक सूरक्षा एंव कल्याण के लिये लिंकेज व्यवस्था।
  - पीएलएचए हेतु सामाजिक हकों और समाज कल्याण के लिंकेज करना।
  - अंतर-मंत्रालयी बैठक में राज्य स्तरीय एड्स कन्ट्रोल सोसायटी के साथ अन्य दूसरी लाईन के विभागों में समन्वय स्थापित कर भागीदारी सुनिश्चित करना।
  - केयर एण्ड सर्पोट सेन्टर द्वारा स्थानीय संसाधन को प्रेरित करना यह सुनिश्चित करना की एचईवी. के साथ जी रहे बच्चों को शिक्षा, पोषण व स्वास्थ्य सहायता प्रदान की जा रही है।
- भेदभाव एवं लांछन आदि को कम करने हेतु समुदाय की प्रणाली का मजबूत बनाना।
  - राज्य एड्स कन्ट्रोल सोसायटी के साथ नजदीकी कार्य व नियमित अंतविभागीय बैठक का अयोजन करना, जिसमे लाछन जैस विषय पर चर्चा, जिससे पीएलएचए. के उपचार में बाधा न हो।
  - केयर एण्ड सर्पोट सेन्टर चालने वाले राज्य स्तरीय संगठन की वित्तीयए, तकनीकी और प्रबंधन क्षमता का निर्माण करना।
  - डीएपीसीयू व राज्य एड्स कन्ट्रोल सोसायटी और स्थानीय स्वस्थ्य प्रणाली के साथ समन्वय बनना।
  - सभी 29 राज्यों एंव 7 केन्द्र शासित प्रदेशो में स्थापित राज्य निरीक्षण समितियों का तिमाही बैठक।

एक नजर में

।बजपअपजपमे	।बीपमअमउमदज
Total PLHIVs registered in the CSC	1983
On ART Phase Client are registered in CSC-Dehradun	1340
Pre ART phase Client are registered in CSC-Dehradun	643
PLHA at least one Counseling received by peer counselor	1980
PLHA at least one Counseling session received on thematic areas	1981
Family member or sexual partner referred for HIV testing and received test result	326
CSC linked to Govt. social welfare scheme	759
Lost of follow up (LFU) brought back to treatment	1261
Advocacy meeting organized	6

पंजीकरण

विहान परियोजना के अन्तर्गज अप्रैल 2017 से मार्च 2018 तक के एचआईवी संक्रमित व्यक्तियो का पंजीकरण विवरण निम्नवत् है :-

स्थिति	पुरूष	महिला	टी.जी	पुरूष बच्चे	महिला बच्चे	कुल योग
प्री. एआरटी	41	15	1	8	2	67
ऑन एआर.टी	86	87	0	12	5	190
	127	102	1	20	7	257

परामर्श

वित्तीय वर्ष अप्रैल 2017से मार्च 2018में कुल [redacted]983 एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों को परामर्श दाता एवं पीयर परामर्श दाता द्धारा परामर्श की सुविधाये प्रदान की गई। परामर्श मे माध्यम से एचआईवी संक्रमित व्यक्ति की मनासिक सपोर्ट की आवश्यकता की पूर्ति की जाती है। 789 व्यक्तियो को परामर्श दाता द्धारा तथा 525 व्यक्तियो को पीयर परामर्शदाता द्धारा निम्न बिन्दूओ पर परामर्श की सेवाये प्रदान की गई। और निम्न मूछ्दो का सम्मलित किया जाता हैं :-

- एचआईवी/एड्स की सामान्य जानकारी।
- एआरटी की प्रतिबद्धता।
- अवसरवादी संक्रमण का प्रबन्धन।
- पौष्टिक आहार।
- मनोवैज्ञानिक समाक्षि ।
- मातृ स्वास्थ्य और शीध्र शिशु रोग निदान।
- एचआईवी रोकथाम।
- स्वास्थ्य और साफ सफाई।
- यौन और प्रजनन स्वास्थ्य।
- किशोरावस्था।
- विपरीत साथी।
- सुरक्षित यौन शिक्षा।
- परिवार नियोजन।
- प्रकटीकरण।
- अन्य- मानव व्यवहार/समाज/योग/अध्यात्म।

इसके अतिरिक्त परियोजना केन्द्र मे स्वेच्छा से 547लोगो ने केन्द्र पर विजिट किया और एचआईवी सम्बन्धी जानकारी इत्यादि प्राप्त की।

लॉस्ट ऑफ फॉलअप (एलएफयू)

01 अप्रैल 2017 से मार्च 2018 माह तक 796 व्यक्तियों जो लोग तीन महीने से ए. आरटी सेन्टर से उपचार नही लेने आये हैं उन की सूची एआरटी सेन्टर द्धारा केयर एण्ड सपोर्ट सेन्टर को उपलब्ध कराई गयी जिसमें 608 एचआईवी संक्रमित व्यक्तियो की तलाश

विहान परियोजना के आउट रिच वर्कर द्वारा उत्तराखण्ड के विभिन्न जिलो मे रिच के माध्यम से कि गई तथा देहरादून और अन्य 6 राज्यों मे घर घर जा कर उनको एआरटी

सेन्टर तक वापस लाया गया। इसके अतिरिक्त जो लोग मिस के वर्ग मे है उन सभी कि सूचि भी एआरटी सेन्टर द्वारा विहान केयर एण्ड सेन्टर को उपलब्ध कराई गई। यह लोग पिछले तीन महीनो से दवाई लेने नही आये है। इसमे मे लोग ही एआरटी तक वापस जोडा गया है। इसमे के कुछ लोग तो पालयान कर गये। कई की मृत्यू हो गई है और कई की आर्थिक स्थिति ठीक नही है इस कारण से यह लोग एआरटी तक नही पहूच पाये है। इस कार्य विहान परियोजना की पूरी टीम का पूर्ण सहयोग रहा है।

सपोर्ट ग्रुप मिटिंग

जून 2017 से मार्च 2018 माह तक 44 सपोर्ट ग्रुप मिटिंग सम्पन्न कराई गई इस बैठको मे 528लाभार्थियो ने प्रतिभाग किया। इन सपोर्ट ग्रुप मिटिंगो में निम्न बिन्दुओ पर चर्चा की गई -

- एचआईवी की बुनियादी जानकारी।
- बुनियादी स्वस्थ्य और साफ सफाई।
- आहार और पोषण।
- घर पर आधिरित देखभाल।

- ओआई प्रबन्धन और सह संक्रमण।
- उपचार शिक्षा/प्रतिबद्धता।
- सामाजिक पात्रता ओर जीविकोपर्जन।
- सकारात्मक रोकथाम/जीवन शैली
- योग और ध्यान।
- एआर टी और उसके प्रबन्धन के साइड इफेक्ट।
- यौन प्रजनन स्वास्थ्य आधिकार और पीपीटीसी।
- कानूनी अधिकार और इसके लिये सन्दर्भ।
- शादी, लत और मनोवैज्ञानिक परामर्श।
- परिवार सहायता परामर्श।
- मुख्यधारा और सम्पर्क।
- लिंग संवेदीकरण और महिला सशक्तिकरण।
- कारपोरेट हाउस पर भ्रमण और उनके साथ जुडाव हेतु सकारात्मक भाषण।
- सुरक्षित यौन शिक्षा, कंडोम शिक्षा सहित आयु वर्गो के लिये बच्चो का छोडकर।
- कानूनी मुद्दो।
- प्रकटीकरण मुद्दो-बच्चे/पति या पत्नि।
- लॉछन और भेदभाव और जीपा।
- **सहकर्मी नेता/सकारात्मक भाषण।**

इमरजेन्सी/रेफरल सर्विस

वित्तीय वर्ष 2017-2018 में संस्था द्वारा एचआईवी संक्रमित व्यक्तियो की आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुये 72 पुरूषो एवं महिलाओ एंव बच्चो की मद्द इमरजेन्सी सहायता के द्वारा प्रदान की गई। जो लोग आर्थिक रूप कमजोर है, वे लोग जो कि एआरटी सेन्टर के कर्मी हडताल पर रहे एवं केन्द्र मे आने जाने की स्थानीय यात्रा व्यय भी सम्मिल है।

एडवोकेसी कार्यक्रम

01 दिसंबर 2017में विश्व एड्स दिवस के कार्यक्रम मे उत्तराखण्ड नेटवर्क एवं विहान परियोजना के कर्मीयॉ द्वारा जन जागरग कर्यक्रम कर आयोजन किया गया मे सस्ंथा विहान परियोजना एंव सस्ंथा से जुडे विभिन्न व्यक्यिों द्वारा एड्स दिवस के उपलक्ष में दो मुख्य कार्याक्रमो का अयोजन किया गया जिसको कि दो चरणों मे बाटा गया जो कि निम्न है।

<u>जागरूकता कर्याक्रम</u>

पहले चरण में देहरादून के प्रमुख स्थानों मे से एक गाधी पार्क राजपुर जहा कि भौगोलिक परिस्थिती एंव उपलभता को ध्यान में रखते हूए जन जागरूकता का अयोजन किया गया जिसमें राह चलते विघालयों शैक्षिक सस्थांनो एंव पर्यटन के लिए आए अन्य व्यक्तियों को भी जागरूक किया गया और साथ ही साथ नव विवाहित जाडों को एचआईव जॉच करने कि सलाह भी दी गई।

एचआईवी और उससे जुड़े सक्रमण

इस कर्याक्रम का मुख्य उद्देश्य एचआई. वी से सक्रमिंत व्यक्तियो के संग जागरूकता कर्याक्रम का आयोजन करने था और साथ ही उन्हे एचक्आईवी से जुड़े अन्य संक्रमणीय रोगो के विष्य में भी जागरूक प्रतिभाग किया गया इस कर्याक्रमका आयेजन सस्ंथ द्वारा किया गया जिसमें करीब 300 व्यकितयों ने परिभाग किया और अन्य विभागो द्वारा भी प्रतिभाग किया गया।

करना एंव जरूरत मंद महिलाओं और बच्चो को मॉ कालिका सेवा दल के माध्यम से पोषण आहार सामग्री के साथ-साथ कमबल भी बाटे जाने थे। जिसके लिए सस्ंथा द्वारा सभी माननीय अधिकारीयों एंव दानदाताओं को आमन्त्रित किया गया था जिसके उपरान्त टीबी विभाग एंव अन्य कई स्वास्थय संबधित विभागो द्वारा भी सहयोग किया गया था जिसके दौरान उपस्थित पीएलएचआईवी व्यक्तियों को एक-एक कर टीबी/एचआईवी हैपाटाईटीस । और ठ के विष्य में भी बताया जिसके पश्चात श्री एसके दत्ता सदस्य मॉ कालिका बाल सेवा दल द्वारा सभी उपस्थित प्रतिभागियों का अभिनन्दन व्यक्त करतें हुए उपस्थी सभी 65 पीएलएचआईवी महिलाओं एवं बच्चो को कमबंल अथवा पौषण आहार बांटा गए और गरीब अनाथ बच्चों के लिए शैक्षिक सहायता प्रदान करने के लिए भी हामी दी है।

सरकारी समाजिक कल्याण योजनाये एवं समाजिक पात्रता

उत्तराखण्ड़ एसोशिएसन फॉर पाजिटिव पीपुल लिंविग विद् एचआईवी/एड्स का मुख्य उद्देश्य यह भी है कि एचआईवी के साथ जीवन यापन करने वाले लोगो को समाज की मुख्यधारा से किस प्रकार जोडा जाना चाहिये। इसी को ध्यान मे रखतें हुए यह पहल की गई है कि इस के अन्तर्गत संस्था द्वारा 603 लाभाथियो को समाजिक कल्याण योजना एवं समाजिक प्रत्रता से जोडा गया है।

1. निशुलक उपचार 7 लाभार्थी
2. अत्योदया अन्न योजना 60 लाभार्थी
3. आई. सी. डी. एस 49 लाभाथी
4. आजिविका सहयोग 76 लाभार्थी
5. कानूनी सहायता 2 लाभार्थी
6. विधवा पेशंन 6 लाभार्थी
7. अधार कार्ड 2 लाभार्थी
8. अन्य सहायता 401 लाभार्थी

स्टेट ओवर साईट कमेटी का गठन

विहान परियोजना के अन्तर्गत उत्तराखण्ड स्टेट ओवर साईट कमेटी का गठन1 22 मार्च 2017 मे उत्तराखण्ड राज्य एड्स नियंत्रण समिति, देहरादून के तत्वधान मे किया गया। स्टेट ओवर साईट कमेटी मे के अध्यक्ष, राज्य एड्स नियत्रण समिति के अपर परियोजना निदेशक, सदस्य सचिव, ममता संस्था एवं एलाइस से सदस्य सहित नेटवर्क एवं परियोजना निदेशक सहित 11 सदस्य है जो कि विहान परियोजना के अन्तर्गत स्थापित केयर एण्ड सपोर्ट सेन्टर की मुल्यांकन एवं कार्यक्रम के कार्ययोजना के तीमही अनुश्रवण इत्यादि करेगा। इस के तहत 27 दिसम्बर 2017 में स्टेट ओवर साईट कमेठी की बैठक का आयोजन किया गया।जिसके परिणाम स्वरूप आज सस्थां ना केवल उत्तराख्ण्ढ़ राज्य में बलिक भारत के कई अन्य राज्यों कि संस्था से अच्छा प्रर्दशन कर रही है ।जिससे सस्था ना केवल राज्य स्तर पर बलिक केद्रिंय स्तर पर भी अपना परचम लहरा रही है।

स्टाफ रिव्यू एवं प्लानिंग मिटिंग

प्रतिमाह की अन्तिम तिथि में स्टाफ रिव्यू एवं अगामी माह की कार्ययोजना तैयार किये जाने हेतु स्टाफ रिव्यू एवं प्लानिंग बैठक की जाती हैं वर्ष 2016-2017 में 12 बैठको का अयोजन किया गया। प्रत्येक माह कि बैठक मे पिछले महीने के लक्ष्य की पूर्ति को देख गाया तथा आगमी माह के लक्ष्य को रखा गया। इसके

आधार पर प्रति माह की प्रगति आख्या को सहयोगी संस्था ममता-एचआईएमसी, दिल्ली को प्रति माह की 03 तिथि आख्या भेजी जाती है। जिससें उपरान्त उनके द्वारा दिए गए निर्देशो के अनुसार भविष्य कि योजनाए सुनिश्चित कि जाती है।

भेदभाव निवारण टीम का गठन

विहान परियोजना के अन्तर्गत भेदभाव निवारण टीम का गठन मार्च 2014 किया गया है। इस टीम में संस्था पदाधिकारी, परियोजना निदेशक, पीयर परामर्शदाता, सोशल एक्टीविस, तथा एचआईवी की साथ जीवन यापन करनेवाले सदस्य सहित 11 सदस्यो की टीम है। इस भेदभाव निवरण टीम के गठन का उदेद्श्य एच. आईवी के साथ जीवन यापन करने वाले महिला, पुरूष एवं बच्चो का किसी भी स्थान पर भेदभाव हो रहा हो उसका निवारण 24 धण्टो में किये जाने के हर सम्भव प्रयास किये जाने है। भेदभाव केबिन्दु निम्नवत् है :-'

- परिवारिक भदेभाव
- नौकरी के स्धान पर भेदभाव
- चिकित्सा सेवाओ भेदभाव
- पूलिस द्वारा भेदभाव
- स्थिानीय नेता एवं समाजिक परिवेश मे भेदभाव
- सम्पत्ति आदि के मुद्दे।
- स्कूल/कॉलेज आदि स्थान पर भेदभाव

स्टाफ प्रशिक्षण

सस्था द्वारा जिन व्यक्ति को कर्या के लिए चिन्हत किया जाता है उन्हे पहले चरण में व्यक्तियो से वार्ता करने परामर्श एंव स्वंय के विचारो से किस प्रकार अधिक से अधिक व्यक्तियों को प्रभावित किया जा सके इस विष्य मे बताया जाता है जिससे कि वह सस्थां और उससे जुड़े कार्यो में परिपूर्णतः साबित कर सके त्तपशचात उन्हे परियोजना के कार्यप्रणाली के विष्य में पूर्णतः अवगत कराया जाता है और उनके साथ रह कर उनके कार्यो का अकंलन करने के पश्चात ही कार्यभार सौंपा जाता है। जिससे कि ना केवल एच. आवी/एड्स तक सिमित रह कर बलिक उससे भी
अधिक समाजिक एकता और जुड़ाव को सभी के अनतर आत्मा में स्थापित किया जा सके।

<u>संस्था के अन्य कार्य</u>

इन्टरशिप कार्यक्रम

संस्था द्वारा समाज मे अपनी पहचान एवं एचआईवी के साथ जीवन यापन करने वाले लोगो के प्रति जारूकता एवं समाजिक सुरक्षा को ध्यान मे रखते हुये समाजिक कार्यकर्ता एवं समाज विज्ञान के छात्र एवं छात्राओं को इन्टरशिप कार्यक्रम के लिये अमांत्रित किया गया है जिसके अन्तर्गत वष्र 2016-2017 में एमएस. डब्लू कोर्स करने वाले छात्र एवं छात्राओं के लिये कार्यशालाओ को आयोजन किया गया। ओर 5 छात्राओं को इसमे सम्मलित किया गया था।

स्वयसेवको का सहयोग

जैसा कि सस्थां या एनजीओ को समाज का एक अहम पहलू माना गया है जो कि बिना समाजिक कर्याक्रताओं के बिना सभंव नही है जिसके लिए प्रत्येक सस्ंथा को भरोसेमंद स्वयसेवको कि आवश्यकता रहती है जो कि सस्थां का अभिन्न भाग होते है और वर्तमान में सस्थां को कई सक्रमित एंव गैर सक्रमिंत व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त जो कि आने वाले वर्षो में बढने कि आशा है और वर्तमान माह मार्च 2018 तक संस्था के पास 40 से अधिक स्वयंसेवक स्थित है।

निशुल्क बस पास

संस्था द्वारा संगठन की ओर से मुख्यमंत्री, परिवहन मंत्री, मुख्य सचिव एवं आयुक्त परिवहन आदि अधिकारियों के समक्ष रख गया है जो कि आने वाले वर्षो में पूर्ण राज्य में लागू हो जाएगा जिसके लिए नेटवर्क द्वारा उत्तराखण्ड़ राज्य के मुखय मत्री को ज्ञापन सौपां गया है और उनसे आसवासन भी प्राप्त किया है कि जल्द से जल्द इस विष्य पर उचित कार्यवाही कि जाएगी। इसके अतिरिक्त उत्तराखण्ड शासन के माध्यम संचालित विभिन्न योजनाओं में एचआईवी के साथ जीवन यापन करने वाले लोगो की आवाज को शासन तक पूहचाया गया है।

वर्ष 2017-2018 का वित्तीय विवरण

विहान केयर एण्ड् सपोर्ट सेण्टर

Sl. No	Activites	Qtr-1	Qtr-2	Qtr-3	Qtr-4	Total
Vihaan Care & Support Center						
I.	***Fixed Assets***					
i)	Computer & Hardware	40350				40350
ii)	Furniture & Fixture	36453				36453
iii)	Office Equipment	10999				10999
	Total	***87802***				***87802***
II.	Human Resources	223918	217336	232879	117254	791387
III.	Overhead	65763	58603	58625	47656	230647
IV.	Living & Support	1220	1882	2130		5232
V.	Planning & Admin. Cost	25300	22800	25047	9700	82847
VI.	Tranning	10277	10472	7522	1350	29621
VII.	World's Aids Day 2017			12000		-
VIII.	IEC Cost		1400			**1400**
	Sub Total	***326478***	***312493***	***338203***	***179618***	**1141134**
	Uttarakhand Association for Positve People Living with HIV/AIDS					
I.	***Fixed Assets***					
i)	Computer & Hardware	11962				11962
ii)	Furniture & Fixture	21707				21707
iii)	Office Equipment	4472				4472
	Total	***38141***				***38141***
II.	***Indirect Expenses***					
	Office Running Cost	298291				298291
III.	***Depriciation on Fixed Assets***	10,978				10978
	Sub Total	***372080***				***347410***
Grand Total		***1614487***				***1614487***

प्रबन्धकारिणी सदस्य

नाम	पद
श्री राम प्रसाद	अध्यक्ष
श्रीमती. रेखा रावत	उपाध्यक्ष
पवन भारद्वाज	सचिव
राजेश	सहसचिव
सिम्मी सिंह	कोषाध्यक्ष
कु दीपा	सदस्य
श्रीमती शकुन्तला देवी	सदस्य
श्री जय नारायण सिंह	सदस्य
श्रीमती सुलोचना नेगी	सदस्य
श्री मनोज सिंह चौहान	सदस्य
श्री दिनेश सिंह	सदस्य

विहान केयर एण्ड सपोर्ट सेन्टर, देहरादून	
नाम	पद
अनिल सिंह रावत	परियोजना समन्वयक
अमित सिंह गुसाई	लेखाकार
पूनम कण्डारी	पीयर कांउन्सलर
नन्दी अधिकारी	आउट रीच वर्कर
प्रीयांशू कुमार	आउट रीच वर्कर

वित्तीय पोषित

चार्टेड एकाउन्टेंट

सचिन अग्रावाल एण्ड कम्पनी

सचिन अग्रवाल, सीए.

प्रथम तल, शिवा पैलेस, राजपुर रोड, देहरादून

हमारे बैंकर्स

बैंक ऑफ बडोदा

राजपुर रोड, देहरादून

कॉरपोरेशन बैंक

हरिद्वार देहरादून बाई पास रोड,

रिस्पाना पुल

देहरादून

फॉटो गैलरी

उत्तराखण्ड़ जिला सवास्थ्य एंव परिवार कलयाण मंत्रालय द्वारा संस्था को उत्तराखण्ड़ मे एचआईवी व्यक्तियों के प्रति योगदान सर्वश्रेष्ठ के लिए सराहा गया।

भारतीय रेडक्रास सोसाईटी द्वारा सस्था को उत्तराखण्ड़ राज्य में एचआईवी व्यक्तियों एंव उनके परिवार के सदस्य के प्रति योगदान एंव निष्ठा भावना के लिए संस्था एंव उसके सदस्यों को सम्मानित किया गया।

प्रैस गैलरी

दैनिक जागरण

देहरादून जागरण

आइवी पॉजीटिव मरीजों की संख्या में दून शीर्ष पर

दुर्व्यवहार से मुंह मोड़ रहे एड्स के मरीज

देहरादून जागरण

एड्स पीड़ितों का तिरस्कार नहीं, सम्मान करें

विश्व एड्स दिवस पर स्वास्थ्य विभाग ने किया ... का आयोजन

जागरूकता ही एड्स से बचने का एकमात्र विकल्प

अमर उजाला

देहरादून 8

एड्स संक्रमितों के प्रति सकारात्मक नजरिया

देहरादून जागरण

एड्स पीड़ितों का तिरस्कार नहीं, सम्मान करें

विश्व एड्स दिवस पर स्वास्थ्य विभाग ने किया ... का आयोजन

जागरूकता ही एड्स से बचने का एकमात्र विकल्प

उत्तराखण्ड एसोसिएशन फॉर पोजिटिव पीपुल लिविंग विद् एच.आई.वी/एड्स

खुद के जख्म भूल औरों की सेवा में जुटे

SPECIAL

- 1890 एचआईवी पॉजिटिव पेशेंट्स की देखभाल को एड्स पीड़ितों ने बनाई संस्था
- एचआईवी पॉजिटिव पेशेंट्स को समय पर मेडिसिन और पौष्टिक भोजन खिला रहे

CONCEPT PIC

trilochan.bhatt@inext.co.in

DEHRADUN (20 Feb): नीलिमा (काल्पनिक नाम) की उम्र 26 वर्ष है. तीन साल पहले एक जांच में उसे पता चला कि वह एचआईवी पॉजिटिव है. यह सूचना नीलिमा के लिए एक तरह से जिन्दगी का अंत थी. कुछ दिनों तक वह परेशान रही. कई बार आत्महत्या करने तक का विचार मन में आया. लेकिन इसके बाद उसने एचआईवी-एड्स के बारे में जानकारियां जुटाना शुरू की. उसे एक ऐसी संस्था की जानकारी मिली, जिसे एचआईवी संक्रमित लोग चलाते हैं और अपने जैसे एचआईवी संक्रमितों की सेवा करते हैं. नीलिमा अब इस संस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और एचआईवी पॉजिटिव लोगों की सेवा में जुटी हुई है. नीलिमा कहती है कि अब तो वह भूल भी गई है कि वह खुद एचआईवी संक्रमित है. नियमित मेडिसिन और पौष्टिक भोजन करती है और दूसरों को यही सलाह देती है.

संस्था के दर्जनभर मैंबर

खुद एचआईवी पॉजिटिव होते हुए दूसरे संक्रमित लोगों की सेवा कर रहे एक दर्जन से अधिक लोगों ने मिलकर यह संस्था बनाई है. संस्था के सदस्यों ने उत्तराखंड के सात जिलों के 1890 लोगों का अपनी संस्था में रजिस्ट्रेशन कर चुके हैं. संस्था के सदस्य रजिस्टर्ड लोगों को हर तरह से मदद करती है, जिसमें मेडिकल हेल्प के साथ ही उन्हें सरकारी योजनाओं से जोड़ने जैसी सहायता भी शामिल है. मेडिसिन से लेकर उचित खान-पान की सलाह भी देते है.

ऐसे करते है मदद

एचआईवी संक्रमित लोगों को यह संस्था सबसे पहले मेडिसिन से जोड़ती है. उन्हें नियमित रूप से मेडिसिन दी जाती है और यदि कोई मेडिसिन बीच में छोड़ता है तो उसे फिर से मेडिसिन से जोड़ा जाता है. इसके साथ ही पौष्टिक आहार के बारे में बताया जाता है. संस्था का मानना है कि इन दो बातों का ध्यान रखकर एचआईवी संक्रमित सामान्य जिन्दगी जी सकता है.

संक्रमित गर्भवतियों पर ध्यान

संस्था संक्रमित गर्भवती महिलाओं का खास ध्यान रखती है. यह दो जिन्दगियों का सवाल होता है. ऐसी महिलाओं के साथ उनकी गर्भस्थ शिशु की भी समय-समय पर एचआईवी जांच करवाई जाती है. बच्चा पैदा होने के बाद भी दो वर्षों तक उसकी नियमित जांच की जाती है. संस्था में शामिल सदस्यों के इस सेवा भाव की देख हर कोई तारीफ करते नहीं थकता.

सरकारी योजनाओं का लाभ

यह संस्था एचआईवी संक्रमितों को सरकारी योजनाओं से जोड़ने में भी मदद करती है. विधवाओं और 60 साल की उम्र पार कर चुके लोगों को पेंशन, सरकार की ओर से मिलने वाली स्वास्थ्य सुविधाओं और विभिन्न तरह के सर्टिफिकेट बनवाने में एचआईवी संक्रमित लोगों की मदद की जाती है.

यह संस्था एचआईवी पॉजिटिव लोगों की मदद करती है. दरअसल हमारे जैसे लोग हमारी समस्या को ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते है. इस संस्था के लोगों को नेशनल एड्स कंट्रोल सोसायटी ट्रेनिंग देती है और कुछ आर्थिक मदद भी.

सभी जिलों में सदस्य सक्रिय

इस संस्था से जुड़े लोग सभी जिलों में उन केन्द्रों में सक्रिय रहते है, जहां एचआईवी-एड्स की जांच की जाती है. इन केन्द्रों में संक्रमित पाये गये लोगों से तुरन्त संस्था के लोग संपर्क करते है. नीलिमा कहती है कि ऐसे लोगों को पहली जरूरत मानसिक रूप से संभालने की होती है. जब लोगों को पता चलता है कि वे एचआईवी संक्रमित है तो उन्हें लगता है कि उनकी दुनिया खत्म हो गई है. ऐसे लोगों को हमारी संस्था सबसे पहले अपना उदाहरण देकर बताती है कि एचआईवी कोई हौवा नहीं है. मेडिसिन और रहन-सहन का स्तर ठीक रखकर हम भी सामान्य जिन्दगी जी सकते है.

---

05 • हिन्दुस्तान

एलबम में भावना, स्लोगन में रुचि अव्वल

एड्स दिवस के अवसर पर फूलचंद नारी शिल्प में आयोजित हुई प्रतियोगिता

पोस्टर प्रतियोगिता में दीपिका प्रथम

38 यूनिट रक्तदान

किया जागरूक